85

28 AUG 2019

दृष्टि The Vision

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

प्रथम प्रश्न-पत्र

(संपूर्ण पाठ्यक्रम)

निर्धारित समयः तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

DTVF/19 (N-M)–M–H13/5

Name: Girdhari lal Meena **Mobile Number:** _____

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** AWAKE-19|E 017

Center & Date: 27/08/2019, Delhi **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: 0856006

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क / SECTION - A

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

1. आपको दिये गए मानचित्र (पृष्ठ नं. 5) पर अंकित निम्नलिखित स्थानों की पहचान कीजिये एवं अपनी प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में उनमें से प्रत्येक पर लगभग 30 शब्दों की संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये। मानचित्र पर अंकित प्रत्येक स्थान के लिये स्थान-निर्धारण संकेत क्रमानुसार दिये गए हैं: 2½ × 20 = 50

   Identify the following places marked on the map supplied to you and write a short note of about 30 words on each of them in your question-cum-answer booklet. Locational hints for the each of the places marked on the map are given below seriatim. 2½ × 20 = 50

   (i) एक महापाषाणिक स्थल → जूनापानी

   A megalithic site

→ मध्यप्रदेश के नासिक क्षेत्र में अवस्थित
→ सिस्ट, पिट प्रकार की महापाषाण कब्रों उत्खनन
मृद्भाण्ड व लौह उपकरणों की प्राप्ति
→ जूनापानी से लेकर आदिचन्नलूर तक महापाषाण
संस्कृति का क्रमिक विकास देखा जा सकता है।

   (ii) एक हिंदू धार्मिक केंद्र

   A Hindu religious centre

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(iii) एक शिलालेख स्थल → विदिशा

An inscription site

→ वर्तमान में मध्यप्रदेश में अवस्थित
→ यहाँ से मौर्योत्तर कालीन एक शुंग वंश का अभिलेख मिला है
→ विदिशा का शिलालेख भागभद्र के समय हेलियोडोरस द्वारा भागवत धर्म के सम्मान में स्तम्भ विकास की सूचना मिलती है।
→ विदिशा का आगे विकास ताम्रपाषाण स्थल के रूप में हुआ।

(iv) एक गुहालेख स्थल → चन्द्रकेतुगढ़

A cave site

→ वर्तमान में पश्चिम बंगाल में कलकत्ता के समीप है
→ यहाँ से मृणमूर्तियाँ निर्माण करने का साक्ष्य भी मिला है।
→ यह एक गुहालेख स्थल भी है।
→ इस स्थल पर कलिंग नरेश खारवेल का अधिकार था।
→ यहाँ से ताम्रपाषाण कालीन साक्ष्य भी मिले हैं

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(v) एक वैष्णव स्थल → ऐहोल

A Vaishnavite site

→ वर्तमान में कर्नाटक में अवस्थित
→ यहाँ से कुछ मंदिर के साक्ष्य मिले हैं जो नागर शैली में निर्मित है।
→ गुप्त काल में यहाँ विभिन्न प्रकार के मंदिरों का निर्माण हुआ।
→ यहाँ मंदिर निर्माण की बेसर शैली का विकास देखा जा सकता है।

(vi) एक नवपाषाणकालीन स्थल → हल्लुर

A neolithic site

→ वर्तमान में कर्नाटक में अवस्थित
→ यहाँ से ताम्र पाषाण व नवपाषाण कालीन साक्ष्य मिले है।
→ हल्लुर से नवपाषाणकालीन कृषि व पशुपालन का साक्ष्य भी मिला है।
→ हल्लुर से आगे पाषाण उपकरण, मृद्भांड व मानव आवास के साक्ष्य भी मिले है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(vii) एक ताम्रपाषाणिक स्थल → पाण्डुराजारढीबी

A chalcolithic site

→ वर्तमान में पश्चिम बंगाल में अवस्थित
→ ताम्र पाषाण कालीन औजार, मृद्भाण्ड तथा कृषि के प्रारम्भिक साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
→ पाण्डुराजारढीबी से मानव कब्रों का साक्ष्य भी प्राप्त हुआ है।
→ पाण्डुराजारढीबी के उत्तरी भाग में ताम्रपाषाण स्थल महिषादल का भी साक्ष्य प्राप्त हुआ है।

(viii) एक महापाषाणिक गर्त शवाधान स्थल → जड़िगेनहल्ली

A megalithic tomb burial site

→ आन्ध्रप्रदेश के क्षेत्र में अवस्थित
→ यहाँ से महापाषाण कालीन गर्त शवाधान का साक्ष्य प्राप्त हुआ है।
→ यहाँ से लोहे के उपकरणों व मृद्भाण्डों के साथ-साथ कृषि की प्रारम्भिक दशा का भी साक्ष्य प्राप्त हुआ है।
→ जड़िगेनहल्ली से प्राप्त शवाधानों से पारलौकिक जीवन में विश्वास की जानकारी मिलती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ix) एक प्राचीन बंदरगाह स्थल → कालीकट

An ancient harbor site

कालीकट एक प्राचीन बंदरगाह है यहाँ से अरब लोगों द्वारा व्यापार किया जाता था। यह वर्तमान में केरल के उत्तरी भाग में अवस्थित है। कालीकट के माध्यम से रोम, अरब, दक्षिण पूर्वी एशिया व चीन के साथ व्यापार किया जाता था। इसके दक्षिणी भाग में संगम बंदरगाह मुजिरीस अवस्थित है।

(x) एक स्तंभलेख स्थल → कालसी

A pillar edict site

→ कालसी वर्तमान में हिमालय क्षेत्र में अवस्थित है।
→ यहाँ से सम्राट अशोक का स्तम्भ लेख प्राप्त हुआ है।
→ इस स्तम्भ लेख से ब्राह्मी लिपि के विकास के साथ-साथ केन्द्रीयकृत साम्राज्य की भी जानकारी मिलती है।
→ कालसी का स्तम्भ लेख अशोक के कल्याणकारी कार्यों की भी सूचना देता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(xi) एक महापाषाणिक भूनिवेश स्थल → कोच्ची

A megalithic site

→ वर्तमान मे केरल में अवस्थित एक बंदरगाही स्थल
→ यहाँ से महापाषाण कालीन विशिष्ट प्रकार की कब्रों का साक्ष्य मिला है
→ कोच्ची का विकास आगे एक बंदरगाह के रूप मे भी हुआ था
→ कोच्ची के महापाषाण आदिचन्नलूर से साम्यता प्रदर्शित करते है

(xii) एक सैंधवकालीन स्थल → रंगपुर

An Indus period site

→ वर्तमान में गुजरात के काठियावाड़ क्षेत्र में अवस्थित
→ रंगपुर से धान की भूसी का साक्ष्य मिला है
→ रंगपुर के उत्तर में लोथल स्थित है जो हड़प्पा काल का विशाल गोदीबाड़ा था
→ रंगपुर से व्यापार भी किया जाता था यहाँ से मनको के भी साक्ष्य प्राप्त हुए है यह एक बंदरगाह स्थल भी था

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(xiii) एक जैन स्थल → बल्लभी

A Jain site

→ बल्लभी वर्तमान में गुजरात के काठियावाड़ क्षेत्र में अवस्थित है।

→ यहाँ द्वितीय जैन समिति का आयोजन देवार्धिक्षमण की अध्यक्षता में किया गया तथा अंग, उपांग साहित्य का सृजन हुआ।

→ यहाँ से विभिन्न जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ भी मिली है।

→ यह एक व्यापारिक स्थल भी है।

(xiv) एक पुरापाषाणिक स्थल → कोटदीजी

A paleolithic site

→ कोटदीजी एक पुरापाषाण स्थल है जिसका विकास नवपाषाण काल में भी हुआ।

→ कोटदीजी का विकास आगे हड़प्पा काल में मनके निर्माण के औद्योगिक केन्द्र के रूप में हुआ।

→ कोटदीजी के उत्तर में मोहनजोदड़ो का विकास भी देखा जा सकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(xv) एक महापाषाणिक एकाश्म स्तंभ स्थल → मणिपुर

A megalithic monolithic pillar site

→ मणिपुर से महापाषाण काल की मेनाहिर प्रकार की कब्रों का साक्ष्य प्राप्त हुआ है।

→ यहाँ से कब्रों से लोहे की वस्तुओं तथा मृद्भाण्डों का साक्ष्य भी प्राप्त हुआ है।

→ मणिपुर के महापाषाण साक्ष्य तिब्बत व दक्षिणी पूर्वी एशिया के साक्ष्यों के साथ साम्यता प्रदर्शित करते है।

→ मानव विकास का प्रारम्भिक साक्ष्य।

(xvi) एक सैंधवकालीन स्थल → बनावली

A Indus period site

→ बनावली हरियाणा के क्षेत्र में स्थित सैंधवकालीन स्थल है।

→ यहाँ से मुड़ी हुई ईंटों का साक्ष्य प्राप्त हुआ है।

→ साथ ही बनावली से हड़प्पा कालीन कृषि विकास की जानकारी हल के साक्ष्य से मिलती है।

→ यह परवर्ती हड़प्पा कालीन स्थल है।

→ यहाँ से हड़प्पा संस्कृति के पतन का साक्ष्य भी प्राप्त हुआ है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(xvii) एक ताम्रपाषाणिक स्थल → कायथा

A chalcolithic site

→ कायथा मध्यप्रदेश में अवस्थित एक ताम्रपाषाणिक स्थल है।
→ यहाँ से विभिन्न ताम्र उपकरण, मृद्भाण्डों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
→ कायथा संस्कृति के वस्त कृषि के साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं।
→ कायथा में ताम्र शिल्पों का निर्माण किया जाता था।

(xviii) एक महाजनपदकालीन स्थल → माहिष्मति / अवंति

A Mahajanapada site

→ माहिष्मति एक महाजनपदकालीन स्थल था जो वर्तमान में मध्यप्रदेश के क्षेत्र में अवस्थित है।
→ यहाँ पर ही अवंति का विकास हुआ था।
→ अवंति पर कालाशोक द्वारा नियंत्रण किया गया था।
→ अवंति क्षेत्र सम्राट अशोक द्वारा मैत्रीपूर्ण संबंधों का निर्माण किया था।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(xix) एक संगमकालीन स्थल

A Sangam site

(xx) एक नवपाषाणिक अधिवास स्थल → पैय्यमपल्ली

A neolithic habitat site

→ आन्ध्रप्रदेश के दक्षिणी भाग में अवस्थित
→ यहाँ से नवपाषाण काल के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं
→ कृषि व पशुपालन के साथ-साथ मानव अधिवास का भी साक्ष्य मिला है।
→ यहाँ से राख का ढेर मिला है जो अनुष्ठानिक कृषि, पशुपालन व सांस्कृतिक विकास की जानकारी देता है।
→ निवास स्थान कच्चे थे।

कृपया इस स्थान
कुछ न लिखें।

(Please don't wri
anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (a) प्राचीन भारत के इतिहास निर्माण में अवशेषों के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

Highlight the importance of relics in the construction of history of ancient India. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (a) मध्य गांगेय घाटी के राजनीतिक-आर्थिक शक्ति के केंद्र के रूप में उभरने के कारणों की समीक्षा कीजिये। 15

Review the reasons for the emergence of the Middle Gangetic Valley as the center of political-economic power. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

हड़प्पा सभ्यता, वैदिक युग के पतन के पश्चात शक्ति का केन्द्र मध्य गांगेय घाटी की तरफ विस्तारित हुआ जिसके कई कारण थे।

इन कारणों से इन क्षेत्रों में महाजनपदों व मगध साम्राज्य का उद्भव हुआ।

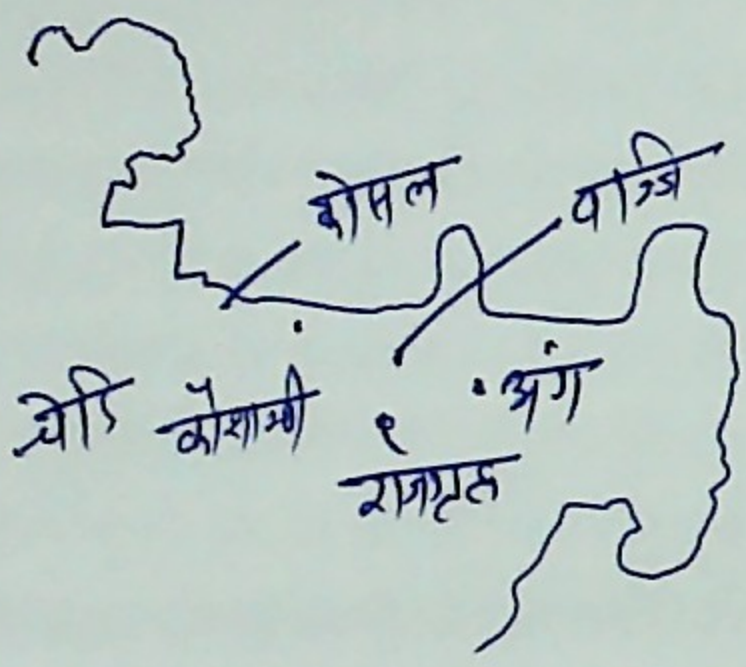

कारण

① यह क्षेत्र नदियों की स्थिति से युक्त था। इस कारण परिवहन के साथ-साथ सिंचाई के साधनों का भी विकास हुआ।

② साथ ही विशाल जंगलों के कारण हाथियों की विद्यमानता भी। इस कारण सैन्य गतिशीलता को बढ़ावा मिला।

③ यह क्षेत्र लोहे की स्थिति से युक्त था। इस कारण कृषि में इसका प्रयोग हुआ तो हथियारों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

का निर्माण कर साम्राज्य का विस्तार किया गया।

④ इस क्षेत्र में वनों के कारण साम्राज्य को प्राकृतिक सुरक्षा प्राप्त हुई।

⑤ शासकों के द्वारा भी इस क्षेत्र के साम्राज्य विस्तार में सहयोग किया गया। वर्धक वंश के शासकों के द्वारा विवाह, कूटनीतिक संधि प्रणाली व युद्धों के माध्यम से विस्तार किया।

① अजातशत्रु के द्वारा लिच्छवियों तथा कोसल के साथ विवाह किया गया तथा वत्स के साथ कूटनीतिक संबंधों का निर्माण भी किया गया। इस समय अंग पर विजय भी प्राप्त की गई।

⑥ आगे ~~विन्दुसार~~ बिम्बसार के द्वारा भी इसी नीति का पालन किया।

⑦ कालाशोक के द्वारा अवंति के क्षेत्र पर नियंत्रण किया तो महापद्मनंद ने कलिंग क्षेत्र पर विजय प्राप्त की।

⑧ आगे चन्द्रगुप्त मौर्य तथा अशोक द्वारा विवाह तथा युद्ध की नीति के माध्यम से साम्राज्य का प्रसार किया तथा इनका साम्राज्य भारत की प्राकृतिक सीमाओं तक विस्तारित हो गया।

⑨ इस क्षेत्र में आर्य संस्कृति का आगमन भी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

ऐसी से हुआ। इस कारण सामाजिक गतिशीलता बाधित नहीं थी तथा शासन में विभिन्न वर्गों की भूमिका बनी रही।

निष्कर्षतः मध्य गंगा घाटी के राजनीतिक-आर्थिक शक्ति के केन्द्र के रूप में उभरने में भौगोलिक स्थिति, शासकों की भूमिका तथा सामाजिक दशा प्रभावी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) वाकाटकों की उत्पत्ति तथा गुप्त शासकों के साथ उनके संबंधों की चर्चा कीजिये। 15

Discuss the origin of Vakatakas and their relationship with Gupta rulers. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मौर्योत्तर काल के पश्चात पश्चिमी तथा उत्तर भारत में वाकाटकों तथा गुप्त शासकों का उदय हुआ।

स्रोत
- साहित्यिक
  - कालीदास
  - अमरसिंह
  - फाहियान
- पुरातात्विक
  - सिक्के
  - चन्द्रगुप्त II का अभिलेख
  - मुहर

वाकाटकों के उदय के लिए देशी व विदेशी मतों का प्रयोग किया जाता है। वाकाटकों द्वारा भारत के पश्चिमी भाग में सत्ता की स्थापना की गई तथा गुप्तों के साथ संबंधों का निर्माण किया गया।

वाकाटकों का उदय स्थानीय तत्वों से माना जाता है। इन वंशों के द्वारा ब्राह्मण धर्म को संरक्षण दिया गया तथा विहारों पर भी धर्म की आकृतियों को उकेरा गया। वाकाटकों द्वारा स्थानीय सामंत से आगे बढ़ते हुए शासक की स्थिति को प्राप्त किया। इनके द्वारा शकों तथा सातवाहनों को भी पराजित किया तथा गुप्तों के साथ संबंध निर्माण किया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

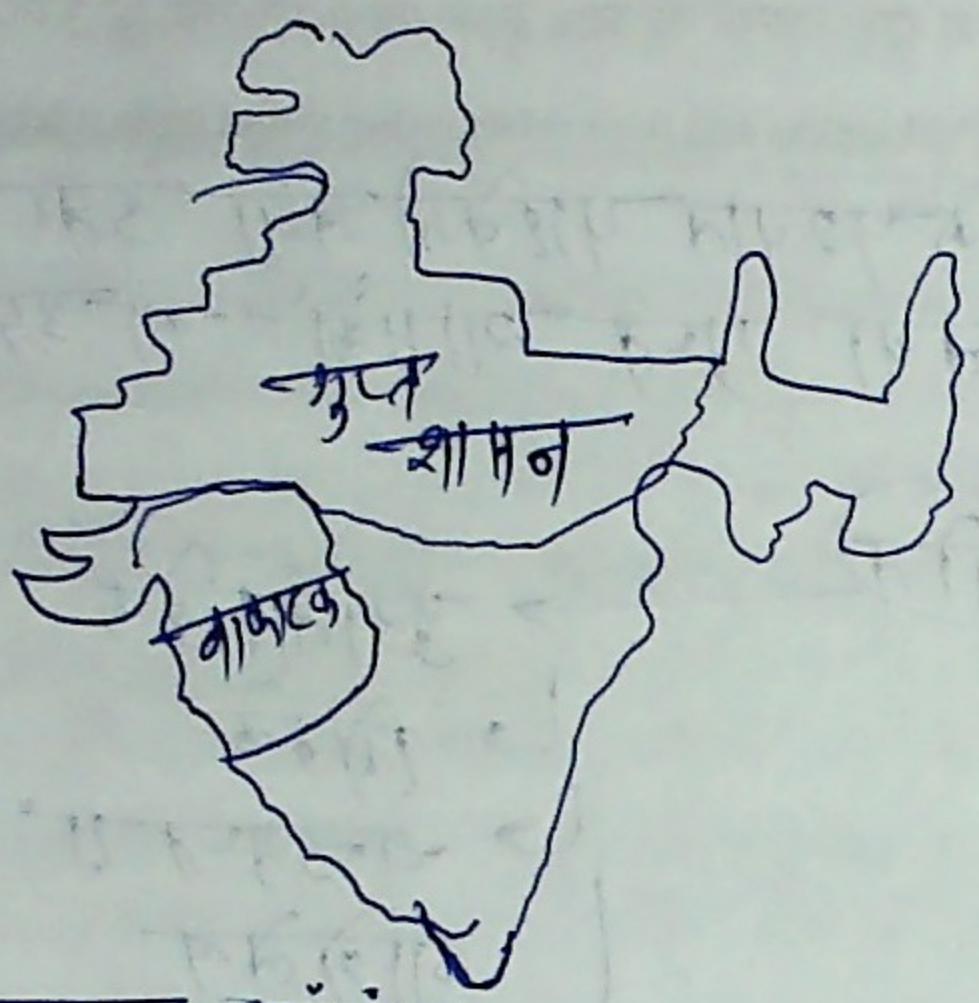

गुप्त-वाकाटक संबंध

① चन्द्रगुप्त II के द्वारा वाकाटकों के साथ वैवाहिक संबंधों का निर्माण किया तथा पुत्री का विवाह यहाँ के शासक रुद्रसेन II के साथ किया गया।

② गुप्तों तथा वाकाटकों द्वारा मिलकर शकों को पराजित किया गया तथा इनके साम्राज्य का विस्तार हुआ।

③ गुप्तों द्वारा वाकाटक क्षेत्र की स्थिति से लाभ लेने के लिए संबंधों का निर्माण किया। यह क्षेत्र अधिशेष कृषि उत्पादन, बंदरगाह की स्थिति से युक्त था। साथ ही दक्षिणी भारत पर नियंत्रण के लिए वाकाटक क्षेत्र पर नियंत्रण आवश्यक था।

④ आगे प्रभावती के समय वाकाटक क्षेत्र को भी

कृपया इस स्थान
कुछ न लिखें।
(Please don't wri
anything in this s

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मुप्त साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया गया तथा गुप्त साम्राज्य का विस्तार हुआ।

(5) गुप्तों तथा वाकाटकों के संबंधों को अजंता गुफाओं में देखा जा सकता है। इस समय यहाँ दोनों के सहयोग से चित्रकारी का कार्य किया गया।

निष्कर्षतः वाकाटकों की स्थानीय तत्वों से उत्पत्ति हुई तथा उनके द्वारा गुप्तों के साथ आवश्यकता आधारित संबंधों का निर्माण किया गया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) 200 ई.पू. से 300 ई. के मध्य देशीय व्यापार की स्थिति को स्पष्ट कीजिये तथा व्यापार में धर्म की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 20

Explain the situation of domestic trade between 200 BC and 300 CE and throw light on the role of religion in trade. 20

मौर्योत्तर काल में आंतरिक व विदेशी व्यापार विकसित अवस्था में था जिसमें आर्थिक विकास के साथ-साथ धार्मिक तत्वों की भी भागीदारी थी।

व्यापार के लिए आधार

- अधिशेष कृषि व शिल्प
- राजनीतिक स्थिरता
- मुद्रा का विकास
- व्यापारिक मार्गों की उपस्थिति
- नवीन धर्मों का उदय
- समुद्री धाराओं की खोज तथा व्यापार में बढ़ोतरी

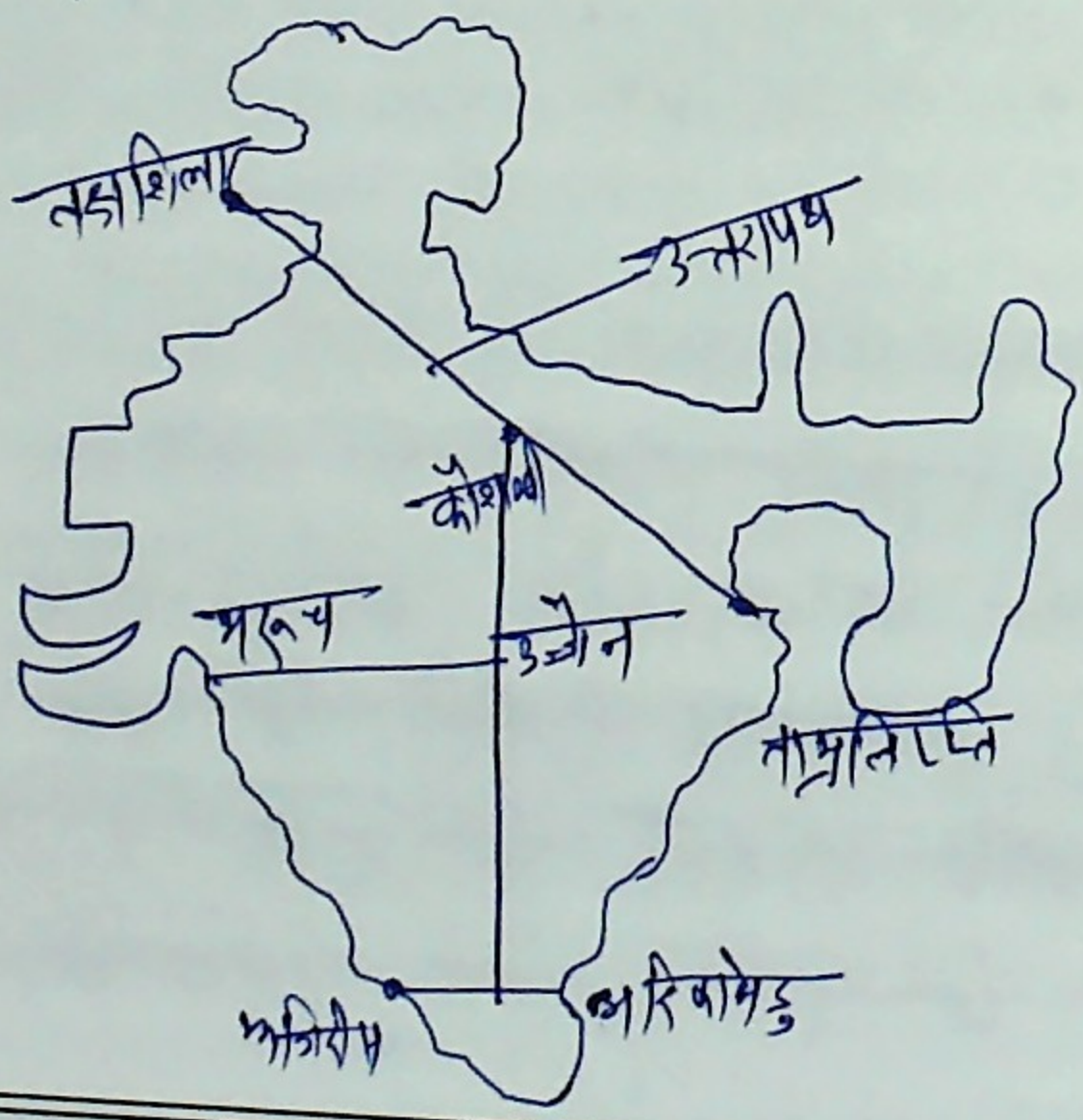

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't wr anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

① व्यापार उत्तरापथ व दक्षिणापथ के माध्यम से किया जाता था।
② आंतरिक व्यापार सामान्यत: ग्रामीण क्षेत्र से शहरों की तरफ किया जाता था।
③ देशीय व्यापार की जानकारी संगम साहित्य के साथ-साथ मनुस्मृति से भी प्राप्त होती है।
④ उरैयूर वस्त्र उत्पादन का प्रमुख केन्द्र था। मथुरा में शाटक नामक वस्त्र का निर्माण किया जाता था। संगम क्षेत्र में हाथीदांत की वस्तुएं व खाद्यान्नों का उत्पादन होता था।
⑤ आंतरिक व्यापार संगम क्षेत्र व उत्तर व दक्षिणी भारत के मध्य होता था।
⑥ व्यापार की वस्तुओं में वस्त्र, हाथीदांत की सामग्री, धातु निर्मित औजार, मृद्भाण्ड, पशु उत्पाद तथा खाद्यान्न प्रमुख थे।
⑦ आंतरिक व्यापार में श्रेणियों की प्रभावी भूमिका थी।
⑧ समृद्ध आंतरिक व्यापार के कारण विदेशी व्यापार का भी विकास हुआ।

धर्म की भूमिका

① इस समय महायान शाखा के उदय होने के साथ-साथ विदेशियों के आगमन के कारण धर्मों में विविधता आयी।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(2) बौद्ध धर्म में कर्मकाण्डों के समावेश के कारण पूजा के लिए वस्तुओं की मांग हुई।
(3) धार्मिक केन्द्र भी व्यापार में प्रभावी भूमिका का निर्वहन करते थे।
(4) विलासी वस्तुओं की मांग के कारण विदेशी व्यापार को बढ़ावा मिला।
(5) धर्म के द्वारा व्यापारियों को आर्थिक सहायता व संरक्षण प्रदान किया गया।
(6) जैन, बौद्ध व चार्वाकों के उदय ने व्यापार को बढ़ावा दिया।

निष्कर्षतः मौर्योत्तर काल में देशीय व विदेशी व्यापार विकसित अवस्था में था तथा इसमें धर्म की भी भूमिका थी।

कृपया इस स्थान ... कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this ...)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (a) मौर्योत्तर काल में गैर-ब्राह्मण धर्मों में आए परिवर्तनों की उनके कारणों के आलोक में चर्चा कीजिये। 15

Discuss the changes introduced in non-Brahmin religions during the post-Mauryan period in light of their reasons. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

खण्ड - ख / SECTION - B

5. निम्नलिखित में से प्रत्येक का लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिये: 10 × 5 = 50

Answer the following in about 150 words each:

(a) "सल्तनत काल में विकसित भक्ति आंदोलन दक्षिण भारत के भक्ति आंदोलन से प्रभावित न होकर तत्कालीन समय की उपज था।" स्पष्टीकरण कीजिये।

"The Bhakti movement developed in the Sultanate period was not a product of the Bhakti movement of South India but a product of the time." Explain.

सल्तनत काल में आंतरिक व बाह्य कारणों से प्रेरित होकर भारतीय समाज एवं संस्कृति में भी परिवर्तन आये तथा इनमें भक्ति आंदोलन प्रमुख है।

मूल कारण

① भक्ति आंदोलन उस समय के समाज की परिस्थितियों की उपज थी। समाज में जाति व्यवस्था एवं वर्ण व्यवस्था की जटिलता के कारण कबीर द्वारा इसका विरोध किया गया।

② धार्मिक कर्मकाण्ड व बहुदेववाद का नानक के द्वारा एकेश्वरवाद का प्रतिपादन कर विरोध किया गया।

③ पूर्व मध्यकालीन जड़ता के कारण समाज में महिलाओं की कमजोर दशा विद्यमान थी। इस कारण मीराबाई, लाल देद तथा अक्कादेवी के द्वारा लैंगिक विभाजन पर आधारित समाज का विरोध किया गया।

④ सूफी संतों एवं इस्लाम की एकेश्वरवादी भावना के कारण भी भक्ति आंदोलन के द्वारा हिन्दू धर्म में सुधारों पर बल दिया गया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

⑤ यद्यपि इस भक्ति आंदोलन पर दक्षिणी भारतीय भक्ति आंदोलन का प्रभाव था। रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य व अलवार, नयनार संतों की शिक्षाएं उत्तर-प्रांत में भी प्रचलित हो रही थी।

⑥ दक्षिण भारत के समाज में सुधारों ने उत्तर भारतीय समाज को भी धार्मिक दृष्टि से सुधारों के लिए प्रेरित किया।

निष्कर्षतः सल्तनतकालीन भक्ति आंदोलन तत्कालीन समय की उपज होने के साथ-साथ दक्षिण भारतीय भक्ति आंदोलन, बुद्धीवाद से भी प्रभावित था।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) तराइन के युद्ध ने 'राजपूत शक्ति के अपरिवर्तनीय पतन के युग' का सूत्रपात कर दिया। टिप्पणी कीजिये।

The war of Tarain initiated the 'era of irreversible decline of Rajput power'. Comment.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

पृथ्वीराज चौहान तथा मुहम्मद गौरी के मध्य तराइन के युद्ध लड़े गए जिनका वर्णन चन्दबरदाई द्वारा पृथ्वीराजरासो में किया गया था।

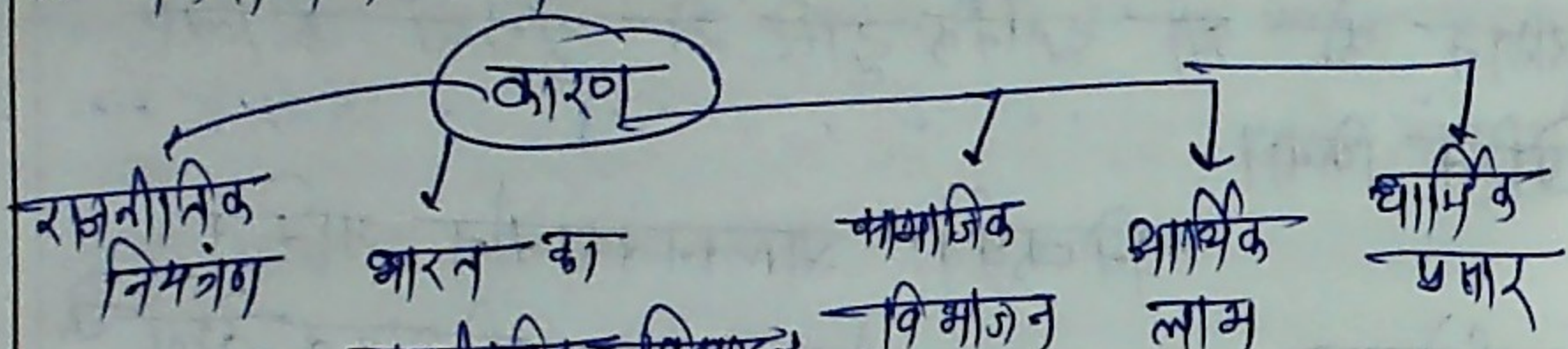

परिणाम

① तराइन के युद्ध ने राजपूत शक्ति के पतन के युग की शुरुआत की। इस युद्ध में राजपूतों के सबसे बड़े राजा की पराजय हुई थी।

② तराइन के युद्ध के पश्चात भारत पर तुर्की साम्राज्य की स्थापना हुई। आगे इल्तुतमिश के द्वारा राजपूतों का दमन किया गया।

③ अलाउद्दीन खिलजी के द्वारा राजनीतिक व आर्थिक लाभ के लिए राजपूताना पर अधिकार किया गया और राजपूतों के पतन की प्रक्रिया जारी रही।

④ राजपूतों का पतन तुगलक काल में भी जारी रहा।

इस तरह तराइन के युद्ध के साथ शुरू हुई पतन की प्रक्रिया निरंतर जारी रही।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

⑤ वस्तुतः राजपूत सामाजिक रूप से विभाजित थे तथा युद्ध का उत्तरदायित्व किसी विशेष वर्ग पर था राजपूतों के विभिन्न शासकों के मध्य भी संघर्ष विद्यमान था जो मुगल काल में भी जारी रहा।

⑥ राजपूतों की आर्थिक दशा एवं सैन्य तंत्र कमजोर था। युद्ध साहस के प्रदर्शन का साधन बन गया था।

⑦ इसके विपरित तुर्की शासक संगठित व धार्मिक प्रसार के उद्देश्य से युक्त थे।

निष्कर्षतः तराइन के युद्ध के पश्चात शुरू हुई राजपूत पतन की प्रक्रिया मुगल व ब्रिटिश काल में भी जारी रही।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) प्रारंभिक मध्यकाल में विकेंद्रीयकृत प्रशासनिक व्यवस्था के स्वरूप पर टीका कीजिये।

Comment on the nature of decentralized administrative system in the early medieval period.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पूर्व मध्यकाल संक्रमण का काल था जहाँ कुछ मात्रा में केन्द्रीयकरण तथा स्थानीय तत्वों की प्रशासन में बढ़ती भूमिका के कारण विकेन्द्रीकरण भी विद्यमान था।

पूर्व मध्यकाल के प्रशासनिक स्वरूप की जानकारी राष्ट्रकूट व चोल स्रोतों के साथ-साथ अरब साहित्य से भी होती है।

विकेन्द्रीयकृत प्रशासन

① गुप्तकालीन सामंती व्यवस्था का विकास हुआ तथा भूमिदान प्रथा के कारण विकेन्द्रीयकरण हुआ।

② राष्ट्रकूटों व चोलों के प्रशासन में विकेन्द्रीकरण दिखाई देता है। चोलों की नायंकार व्यवस्था इसी स्वरूप पर आधारित थी।

③ विदेशी आक्रमण एवं सामंतवाद के कारण राजा की शक्ति कम हो गई थी तथा वह सेना के लिए सामंतों पर निर्भर था।

④ न्याय प्रशासन में राजा सर्वोच्च था लेकिन व्यवहार में स्थानीय क्षेत्र में यहाँ भी विकेन्द्रीयकरण ही प्रभावी था।

⑤ राजस्व व्यवस्था भी विकेन्द्रीकरण की सूचक है तथा सामंतों द्वारा कुछ मात्रा में केन्द्र को राजस्व

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भेजा जाता था।

⑥ प्रशासन की विकेन्द्रीकृत प्रणाली के कारण राज्य की शक्ति में कमी आयी तथा अरब तथा तुर्की आक्रमणों का सामना राज्य नहीं कर सका।

⑦ साथ ही प्रशासनिक गुटबंदी, जटिलता व अपव्यय भी बढ़ा तथा इस कारण उस समय की राजनीतिक अवस्था का पतन हो गया।

निष्कर्षतः पूर्व मध्यकालीन प्रशासनिक अवस्था में विकेन्द्रीकरण ही प्रभावी था जो राज्य की शक्ति में कमजोरी का कारण भी बना।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(d) जहाँगीर पर अकबर की धार्मिक नीति से पलायन का आक्षेप कितना तर्कसंगत है?

How rational is the attack on Jahangir for escaping from Akbar's religious policy?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

मुगलकाल में राजनीतिक, धार्मिक व प्रशासनिक कारणों से धार्मिक नीति का निर्माण किया गया जो सम्राट की प्रकृति तथा तत्कालीन समय की परिस्थितियों से परिचालित होती थी।

अकबर की धार्मिक नीति

① अकबर द्वारा तीर्थयात्रा कर, दास प्रथा व जजिया का उन्मूलन कर दिया था।

② राजपूतों, सिक्खों के साथ धार्मिक समन्वय की नीति के आधार पर व्यवहार किया था।

③ अकबर की धार्मिक नीति दीन-ए-इलाही, महजरनामा के आधार पर राजनीतिक हितों को वरीयता प्रदान करती है।

④ इस तरह अकबर की धार्मिक नीति धार्मिक सहिष्णुता व राजनीतिक हितों को बढ़ावा दे रही थी।

जहाँगीर की धार्मिक नीति

① जहाँगीर पर आरोप है कि अकबर की धार्मिक नीति से पलायन किया गया। मथुरा व अन्य क्षेत्रों में मंदिरों को तोड़ा गया। गुरु अर्जुनदेव को फाँसी भी इसी नीति का परिणाम था। जहाँगीर के समय राजपूतों की धार्मिक सहिष्णुता बाधित

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हुई।

समीक्षा ① जहाँगीर द्वारा मंदिर गिराने का आदेश नहीं दिया था।

② गुरु अर्जुनदेव को राजनीतिक कारणों से मारा गया। वस्तुतः गुरु अर्जुनदेव के द्वारा जहाँगीर के राजनीतिक प्रतिद्वंदी खुसरो का सहयोग किया था।

③ इस समय मंदिरों का निर्माण कार्य तथा जजिया का चिलम्बन जारी रहा।

④ मनसबदारी व्यवस्था में हिन्दुओं की भागीदारी बनी रही।

निष्कर्षतः जहाँगीर काल में अकबर कालीन धार्मिक नीति कुछ राजनीति से प्रेरित विचलनों के बावजूद जारी रही।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(e) बंदा बहादुर के नेतृत्व में सिख आंदोलन एक सामाजिक प्रतिरोध आंदोलन था। टीका कीजिये।

The Sikh movement was a social resistance movement led by Banda Bahadur. Comment.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

गुरु गोविंद सिंह के पश्चात बंदा बहादुर द्वारा सिक्ख धर्म के विकास के साथ-साथ धार्मिक व सामाजिक क्षेत्र में भी सहयोग किया गया।

इस समय वर्ग

① बंदा बहादुर के द्वारा समाज के निम्न वर्ग को सेना में शामिल किया तथा ये वर्ग घोड़े पर बैठकर गाँव से निकल सकते थे।

② निम्न वर्ग को प्रशासन में भागीदारी दी गई।

③ बंदा बहादुर के द्वारा स्त्रियों की दशा को सुधारने के लिए प्रतिक्रिया स्वरूप विभिन्न कार्य किए।

④ बंदा बहादुर के कार्यों के तत्त किसानों के हितों की बात की गई तथा उन्हें संरक्षण दिया गया।

⑤ बंदा बहादुर द्वारा वर्ण व जाति आधारित सामाजिक विभाजन को अस्वीकार कर दिया।

⑥ बंदा बहादुर द्वारा लोहागढ़ के किले को केन्द्र बनाकर राजनीतिक विस्तार किया तथा निम्न वर्ग के लोगों को प्रशासन में शामिल किया गया।

⑦ बंदा बहादुर के द्वारा तत्कालीन सामाजिक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

दशा से प्रतिशोध के स्वरूप सिक्ख आंदोलन को विस्तारित किया तथा उसे मिशनरी स्वरूप प्रदान किया।

(8) लेकिन यह केवल प्रतिशोध पर ही आधारित नहीं था बल्कि सिक्ख धर्म की समानता, एकेश्वरवाद व भाईचारे की भावना का प्रसार किया गया तथा समाज की दशा के आधार पर इसमें परिवर्तन किया गया।

निष्कर्षतः बंदा बहादुर के समय का सिक्ख आंदोलन सामाजिक प्रतिरोध आंदोलन के साथ-साथ नवीन तत्वों से भी युक्त दिखाई देता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (a) विजयनगरकालीन राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन में धर्म व धार्मिक वर्गों की भूमिका को स्पष्ट कीजिये। 15

Explain the role of religion and religious classes in the political, social and economic life of Vijayanagar. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

बर्टन स्टीन के द्वारा विजयनगर की शासन व्यवस्था में धर्म की भूमिका के कारण इसे अनुष्ठानिक राज्य व व्याख्यित राज्य की उपमा दी।

विजयनगर के राजा हिन्दू धर्म से सम्बन्धित थे तथा धर्म का सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक जीवन में हस्तक्षेप था—

① राजा दूरस्थ क्षेत्र तथा सामंतों पर रामनवमी के उत्सव के माध्यम से नियंत्रण रखता था।

② धर्म के आधार पर भूमिदान दिया जाता था। इस कारण भी राज्य का धार्मिक तत्वों के आधार पर संचालन किया जाता था।

③ राजा धार्मिक वर्गों की सलाह के आधार पर कार्य करता था तथा धार्मिक वर्गों द्वारा राजा की सर्वोच्चता का समर्थन किया जाता था। इस समय के दौरान भी सामंती व्यवस्था के आधार पर राजा को ही प्रमुख बनाते थे।

④ प्रशासनिक क्षेत्र में भी धर्म की प्रभावी भूमिका थी। नायकों पर नियंत्रण के लिए धार्मिक कर्तव्यों व नैतिकता की धर्म आधारित अवधारणा का प्रयोग किया जाता था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(5) सामाजिक क्षेत्र में भी धर्म व धार्मिक वर्ग की भूमिका थी। समाज का ब्राह्मण तथा गैर ब्राह्मण वर्ग में विभाजन किया जाता था। जाति व्यवस्था तथा महिलाओं की स्थिति को धर्म के आधार पर तैयार किया जाता था।

(6) विवाह, न्याय व्यवस्था तथा अन्य कार्यों में मंदिरों की प्रभावी भूमिका थी। रहन-सहन तथा खान-पान का निर्धारण धर्म के आधार पर किया जाता था।

(7) आर्थिक जीवन में भी धर्म प्रभावी था। मंदिर ऋण व्यवस्था, हुंडी व्यवस्था का संचालन करते थे।

(8) मंदिरों द्वारा कृषि को संरक्षण दिया गया तथा जल संरक्षण व सिंचाई के स्रोतों का विकास किया गया।

(9) मंदिरों द्वारा शिल्पियों को संरक्षण दिया गया। मंदिर विभिन्न आर्थिक विवादों का भी समाधान करते थे।

(10) मंदिरों द्वारा व्यापारिक श्रेणियों को संरक्षण दिया जाता था तथा इस व्यापार के कारण आर्थिक दशा में सुधार हुआ।

(11) मंदिर वस्तुओं की गुणवत्ता, कीमत निर्धारण के साथ-साथ सामाजिक व आर्थिक संबंधों को भी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रभावित करते थे।

निष्कर्षतः विजयनगर काल में शासक सर्वोच्च था लेकिन शासक की वैधता एवं राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक जीवन में ~~मंदिरों~~ ~~[illegible]~~ धर्म व धार्मिक वर्ग की प्रभावी भूमिका थी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(b) 16वीं-17वीं सदी में स्त्रियों की स्थिति पर टीका कीजिये। 15

Comment on the condition of women in the 16th-17th centuries. 15

मध्यकालीन भारत में महिलाओं की स्थिति को लेकर विवाद की स्थिति रही है जो वास्तविक स्थिति निर्धारण में प्रमुख बाधा है।

शासक स्तर पर महिलाओं की स्थिति को आदर्श दशा मानकर इरफान हबीब के द्वारा मुगल काल में महिलाओं की अच्छी दशा का चित्रण किया गया। दूसरी तरफ समकालीन स्रोत महिलाओं की कमजोर दशा की भी सूचना देते हैं।

① माहम अनगा, नूरजहाँ, जहाँआरा, दुर्गावती जैसी महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी थी।

② मुगल काल में कालमती देवी, सहजो बाई (सहज प्रकाश), गंगा देवी द्वारा साहित्य के क्षेत्र में विकास किया गया।

③ मुगल काल में महिलाओं को शिक्षा का अधिकार प्राप्त था लेकिन वैज्ञानिक-तकनीकी शिक्षा का अभाव था।

④ मुगल काल में स्थानीय राजाओं के प्रशासन में महिलाओं की भूमिका थी।

⑤ दुधमुँहे बच्चे के साथ स्त्री का श्रम करते हुए चित्रण स्त्रियों की कमजोर दशा का

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सूचक है।

⑥ विदेशी यात्रियों के द्वारा महिलाओं की कमजोर दशा का चित्रण किया गया।

⑦ समाज में बहु विवाह, सती प्रथा व बाल विवाह का प्रचलन था। समकालीन साहित्य में दहेज प्रथा का साक्ष्य भी प्राप्त हुआ है।

⑧ महिलाओं को शिक्षा का अधिकार प्राप्त नहीं था तथा ग्रामीण क्षेत्र में महिलाएँ गरीबी का जीवन व्यतीत करती थी।

⑨ वर्ण व्यवस्था एवं लैंगिक विभाजन के कारण महिलाओं का दोहरा शोषण होता था।

⑩ कई फारसी लेखकों द्वारा वर्णन किया गया कि महिलाओं को सम्पत्ति का अधिकार प्राप्त नहीं है तथा महिलाओं को दास बनाया जाता था।

⑪ ओरछा के शासक के यहाँ कई नर्तकियाँ थी तथा वेश्याओं को समाज में सम्मान भी प्राप्त नहीं था।

⑫ देवदासी प्रथा के कारण महिलाओं का धर्म के सहारे शोषण किया जाता था।

⑬ यद्यपि अकबर के द्वारा दीन-ए-इलाही के माध्यम से बेमेल विवाह न करने एकपत्नि धर्म

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की बात कही थी। लेकिन यह समाज में लागू नहीं हो सकी।

निष्कर्षतः 16-17 वीं शताब्दी में महिलाओं की दशा सामान्यतः कमजोरी थी तथा शासक वर्ग के स्तर पर महिलाओं की कुछ सकारात्मक स्थिति दिखाई देती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) "शिवाजी के क्षेत्रीय विस्तार का एक प्रमुख कारण मुगल-मराठा संबंधों का अस्पष्टताओं से घिरा होना था।" स्पष्टीकरण कीजिये। 20

"A major reason for Shivaji's territorial expansion was the ambiguity of Mughal-Maratha relations." Explain. 20

शिवाजी के द्वारा मुगलों की मराठा नीति की अस्पष्टता का लाभ लेकर साम्राज्य का विस्तार किया जो आगे संघर्ष का कारण भी बना।

अकबर के समय दक्कन क्षेत्र में विस्तार की नीति अपनाई गई। आगे जहाँगीर द्वारा भी इस नीति को जारी रखा। मुगल-मराठा संघर्ष की वास्तविक स्थिति औरंगजेब के समय देखी गई।

अस्पष्टता

① औरंगजेब शिवाजी को एक पहाड़ी चूहा समझता था। इस कारण एक स्पष्ट रणनीति का निर्माण नहीं किया गया।

② औरंगजेब शिवाजी से ज्यादा बीजापुर व गोलकुण्डा को संकट का कारण मानता था।

③ इसी कारण शिवाजी के बजाय इनके साथ संघर्ष किया गया।

④ मुगलों द्वारा दक्षिणी विस्तार के क्रम में मराठाओं से सहयोग भी लिया गया जो नीति की अस्पष्टता का सूचक है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(5) इस नीति की अस्पष्टता का सहारा लेकर शिवाजी द्वारा शाइस्ता खाँ को पराजित किया। कोलाबा, रायगेन, पुरन्दर के क्षेत्र में साम्राज्य का विस्तार किया गया। साथ-साथ साम्राज्य को अहमदनगर व गोलकुण्डा के क्षेत्र में भी विस्तारित किया गया।

(6) शिवाजी के द्वारा काठियावाड तथा निजाम के क्षेत्र पर भी आक्रमण किया गया।

(7) शिवाजी के विस्तार के कारण औरंगजेब द्वारा सक्रिय नीति अपनाई तथा विभिन्न सरदारों के माध्यम से ~~औरंगजेब के~~ शिवाजी के साथ संघर्ष किया गया।

(8) जयसिंह को दक्कन का सूबेदार बनाकर भेजा गया तथा औरंगजेब द्वारा अपना अधिकांश समय दक्कन में ही व्यतीत किया।

(9) इस नीति के कारण मुगल-मराठा संघर्ष भी बढ़ा जो सम्भाजी के समय जारी था। औरंगजेब के द्वारा दमन की नीति अपनाई। इस नीति की प्रतिक्रियास्वरूप मराठा विरोध सामने आया तथा औरंगजेब दक्कन में ही उलझ कर रह गया।

(10) शिवाजी के क्षेत्रीय विस्तार के अन्य कारणों में गुरिल्ला युद्ध प्रणाली, शिवाजी की योग्यता, औरंगजेब

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की नीतियों की अस्पष्टता व दक्कन की राजनीतिक स्थिति भी जिम्मेदार थी।

निष्कर्षतः शिवाजी के क्षेत्रीय विस्तार के कारण मुगल - मराठा संघर्ष बढ़ा जो अंततः दोनों के ही पतन का कारण बना।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (a) दिल्ली सल्तनत की स्थापना के बाद कृषि संबंधों की प्रकृति में आए बदलावों की चर्चा कीजिये। 15

Discuss the changes in the nature of agricultural relations after the establishment of the Delhi Sultanate. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत में कृषि संबंधों की स्थिति आर्थिक आवश्यकताओं तथा शासकों की नीतियों के आधार पर निरंतर परिवर्तित होती रही।

दिल्ली सल्तनत की स्थापना से पूर्व सामंती व्यवस्था के कारण कृषकों का शोषण विद्यमान था। इस की जानकारी बुलेमान, अलबरूनी के वर्णन से होती है।

सल्तनतकालीन संबंध

① सल्तनतकाल में एक केन्द्रीय सत्ता की स्थापना की गई। इस कारण शासक व कृषकों का संबंध बढ़ा।

② सुल्तानों का राजस्व सिद्धांत प्रत्यक्ष नियंत्रण को बढ़ावा देता था।

③ इल्तुतमिश के समय कृषकों के साथ प्रत्यक्ष संबंधों की आवश्यकता पर बल दिया।

④ अलाउद्दीन खिलजी द्वारा भूमि की माप करवाई तथा वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर भू राजस्व का निर्धारण किया गया।

⑤ अलाउद्दीन खिलजी ने मध्यस्थों का उन्मूलन

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spa

कियान्वयन प्रत्यक्ष संबंधों के निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया।

⑦ गयासुद्दीन तुगलक के द्वारा वस्तु आधारित भू राजस्व व्यवस्था के बजाय उत्पादन की अधिकता पर आधारित व्यवस्था पर बल दिया।

⑧ मुहम्मद बिन तुगलक के समय कृषकों के हितों के लिए कार्य किया गया। कृषकों को तकावी (ऋण) की सुविधा उपलब्ध करवाई गई।

⑨ इसी तरह फिरोजशाह तुगलक के द्वारा बागानी कृषि के विकास के साथ-साथ कृषकों को ऋण संबंधित से भी मुक्त कर दिया।

⑩ आगे शेरशाह सूरी के द्वारा कृषकों के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्धों का निर्माण किया तथा रैय्यतवाड़ी व्यवस्था का संचालन किया।

⑩ दिल्ली सल्तनत की स्थापना के पश्चात सत्ता के केन्द्रीयकरण के कारण कृषकों का शोषण कम हुआ। शासक द्वारा किसानों को कृषि विकास में सहयोग दिया जाता था।

⑪ राजकीय कारखानों की आवश्यकताओं के लिए खेती कार्य पर बल दिया गया। बागानी कृषि, तेल की कृषि के साथ-साथ कपास उत्पादन पर भी बल दिया गया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(12) ग्रामीण क्षेत्र में पटवारी की भूमिका प्रभावी रही

निष्कर्षतः सल्तनत काल में कृषि संबंधों में राजनीतिक व आर्थिक कारणों के साथ-साथ सैन्य आवश्यकताओं के आधार पर परिवर्तन हुआ।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) 15वीं सदी में उत्तर भारत में उदित एकेश्वरवादी आंदोलनों में विद्यमान आधारभूत साम्यता पर प्रकाश डालिये। 15

Throw light on the basic equity existing in the monotheistic movements that emerged in North India in the 15th century. 15

15 वीं सदी में धार्मिक व सामाजिक सुधार के लिए भक्ति आंदोलन का उदय हुआ तथा इसके द्वारा एकेश्वरवाद पर बल दिया गया।

इस भक्ति आंदोलन द्वारा कर्मकाण्डों तथा कर्मकाण्डों का विरोध किया गया तथा एक ईश्वर की अवधारणा पर बल दिया गया।

① एकेश्वरवादी आंदोलनों में सिक्ख धर्म प्रमुख है। सिक्ख धर्म के द्वारा एकेश्वरवाद पर प्रमुख रूप से बल दिया। गुरु नानक के अनुसार बहुदेववाद के कारण समाज का विभाजन होता है तथा धार्मिक जटिलताओं को बढ़ावा मिलता है। इसी कारण नानक द्वारा सभी धर्मों में एकेश्वरवाद की अवधारणा का समर्थन किया।

② इसी समय सूफी एकेश्वरवादी आंदोलन का भी विकास हुआ। सूफीवाद के तहत सभी धर्मों में धार्मिक समन्वय तथा मानवीय एकता पर बल दिया। सूफीवाद के अनुसार सभी धर्मों का ईश्वर समान है तथा धर्म ग्रन्थों द्वारा उसकी अलग-अलग व्याख्या की जाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

③ हिन्दू धर्म में भी एकेश्वरवादी आंदोलनों का विकास हुआ मीरा के द्वारा एकेश्वरवाद का समर्थन किया गया। इसी समय राजस्थान के क्षेत्र में अनेक संतों का उदय हुआ तथा एकेश्वरवाद का समर्थन किया।

④ कबीर के द्वारा भी बहुदेववादी अवधारणा, कर्मकांडों पर चोट की गई तथा निर्गुण भक्ति का समर्थन किया गया।

⑤ महाराष्ट्र में महाराष्ट्र धर्म का उदय हुआ तथा इसके द्वारा भी सभी ईश्वरों में साम्यता के तत्व की बात की।

⑥ कश्मीर में लाल देद द्वारा भी एक ईश्वर पर विश्वास व्यक्त किया गया।

⑦ वस्तुतः इन एकेश्वरवादी आंदोलनों द्वारा तत्कालीन समय के धर्म में सुधार किया। हिन्दू धर्म के एकेश्वरवादियों द्वारा धर्म में सुधार किया गया तो सिख व सूफी पंथों द्वारा नवीन विकल्प प्रदान किया गया।

⑧ इन एकेश्वरवादी आंदोलनों के कारण सामाजिक सहयोग की भावना में वृद्धि हुई तथा कर्मकांडों में कमी के कारण वैज्ञानिक प्रवृत्ति का विकास हुआ

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

निष्कर्षतः 18वीं सदी में उत्तर भारत में उदित एकेश्वरवादी आंदोलनों धर्म में सुधार या नवीन विकल्पों के माध्यम से आधारभूत सामग्री का प्रदर्शन किया गया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(c) सल्तनतकालीन विकसित हिंदू-इस्लामी वास्तुकला के क्रमिक विकास पर प्रकाश डालिये तथा इनके प्रमुख लक्षणों को भी दर्शाइये। 20

Throw light on the gradual development of the developed Hindu-Islamic architecture of the Sultanate period and highlight its main features. 20

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

राजनीतिक स्थायित्व तथा सुल्तानों की रूचि के कारण सल्तनतकालीन स्थापत्य का विकास हुआ जो समन्वित संस्कृति का प्रदर्शन करती है।

प्रमुख लक्षण

① सल्तनतकालीन स्थापत्य कला भारतीय ट्राबियत व तुर्की अरकुएट शैली का मिश्रण है। भारतीय शैली में बल्ली व शहतीर का प्रयोग किया जाता था वर्षाकि अरकुएट शैली में गुम्बद एवं मेहराब के कारण विशाल आकार के भवनों का निर्माण किया गया।

② अलंकरण के लिए फूल-पत्ती तथा कुरान की आयतों का सहारा लिया गया तथा मानव की आकृतियों को नहीं उकेरा जाता था।

③ अलाई दरवाजा में कुछ मात्रा में संगमरमर का भी प्रयोग किया गया।

④ सल्तनत कालीन स्थापत्य धार्मिक व धर्मनिरपेक्ष स्वरूप से परिचालित थी तथा धार्मिक तत्व प्रधान था। आगे मुगल काल में धर्मनिरपेक्ष तत्व को भी बल मिला।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

क्रमिक विकास

① कुतुबुद्दीन ऐबक के द्वारा अढ़ाई दिन का झोपड़ा व कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद का निर्माण करवाया गया। इस समय निर्मित कुतुब मीनार सल्तनतकाल का उत्कृष्ट उदाहरण है।

② इल्तुतमिश के द्वारा मकबरों के निर्माण को शुरू करवाया तथा नासिरुद्दीन महमूद के मकबरे का निर्माण करवाया गया। इस समय कुतुब मीनार के निर्माण का कार्य भी जारी रहा।

③ अलाउद्दीन खिलजी के द्वारा सीरी का महल, विभिन्न दुर्गों का निर्माण करवाया गया। इस समय घोड़े की नाल के आकार में मेहराब प्रणाली का भी निर्माण करवाया गया।

④ तुगलक काल में सलामी दीवारों का प्रयोग किया गया। इन दीवारों में झुकाव के कारण मजबूती प्राप्त हुई। तुगलकाबाद के किले की प्रशंसा इब्नबतूता द्वारा भी की गई थी।

⑤ फिरोज तुगलक के समय फिरोजपुर, जौनपुर, फिरोजाबाद जैसे नगरों का निर्माण किया गया तो इस समय विभिन्न सरायों का भी निर्माण किया।

⑥ आगे सैय्यद काल में विभिन्न मकबरों

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

का निर्माण करवाया गया तथा इसी कारण इसे मकबरों का काल भी कहते हैं।

(7)

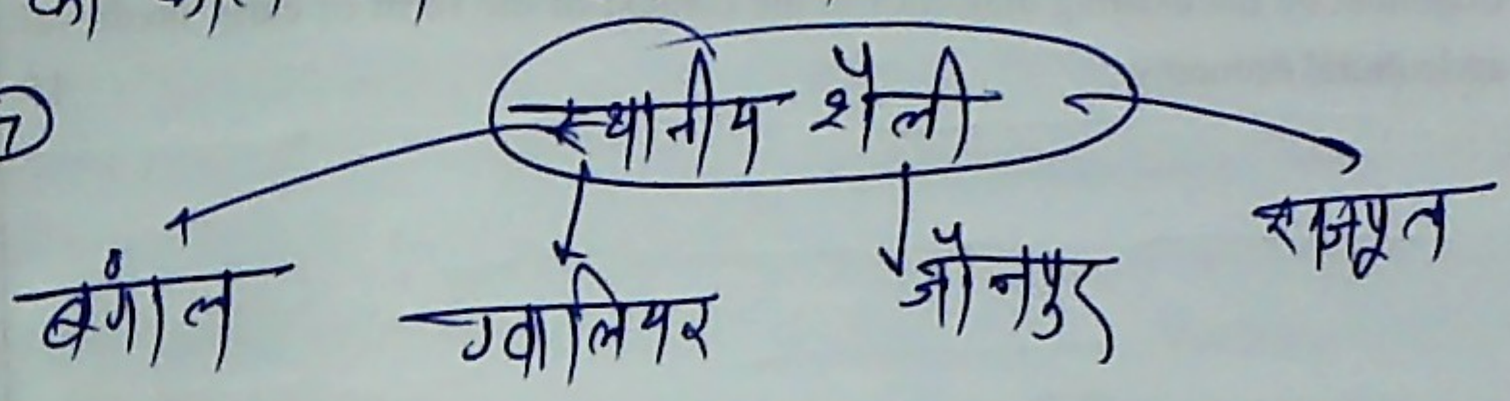

निष्कर्षतः सल्तनतकालीन स्थापत्य क्रमिक विकास के गुण से युक्त है तथा इसका विकास मुगल काल में भी जारी रहा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation